श्री लाल नाथ हिन्दू महाविद्यालय, रोहतक

एक दिवसीय बहुविषयक राष्ट्रीय संगोष्ठी

"वैश्वीकरण के दौर में साहित्य, राजनीति, मीडिया और बाजार"

मार्च 29, 2023

श्री लालनाथ हिंदू महाविद्यालय के हिंदी विभाग व उच्चतर शिक्षा विभाग, पंचकूला, हरियाणा के संयुक्त तत्त्वावधान में एक दिवसीय बहुविषयक राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन किया गया, जिसका विषय "वैश्वीकरण के दौर में साहित्य, राजनीति, मीडिया और बाजार" रहा। इस राष्ट्रीय संगोष्ठी में हरियाणा राज्य के विभिन्न महाविद्यालयों एवं विश्वविद्यालयों से 245 शोधार्थियों एवं प्राध्यापकों ने पंजीकरण कराया। उद्घाटन सत्र की शुरुआत मुख्य अतिथि प्रोफेसर सुरेंद्र कुमार (डीन एकेडमिक अफेयर्स, म.द.वि., रोहतक) एवं प्रबंध समिति के पूर्व प्रधान श्री राजेश कुमार सहगल , महासचिव श्री जितेंद्र मेहता , प्रबंधक श्री श्याम कपूर , प्रबंधक एस.एफ.एस श्री नंदलाल गिरधर एवं प्राचार्य डॉ रश्मि छाबड़ा के द्वारा भारतीय संस्कृति का निर्वहन करते हुए सरस्वती मां के सामने दीप प्रज्ज्वलित कर की गई।

उद्घाटन सत्र में दीप प्रज्ज्वलन

पूर्व प्रधान श्री राजेश कुमार सहगल,प्रबंध समिति के गणमान्य सदस्यों व प्राचार्या डॉ रश्मि छाबड़ा द्वारा मुख्य अतिथि को पौधा भेंट कर उनका स्वागत व अभिनंदन किया गया ।

मुख्य अतिथि प्रोफेसर सुरेंद्र कुमार का पौधा भेंट कर स्वागत किया गया।

हिंदी विभागाध्यक्षा एवं राष्ट्रीय संगोष्ठी संयोजिका डॉ अंजू देशवाल ने संगोष्ठी के विषय पर प्रकाश डालते हुए कहा कि वैश्वीकरण भूमंडलीकरण, उदारीकरण, बाजारवाद आदि एक दूसरे के पर्यायवाची हैं । आज के समय में वैश्वीकरण ने संपूर्ण विश्व पर प्रभाव डाला है।

हिंदी विभागाध्यक्षा एवं संगोष्ठी संयोजिका डॉ अंजू देशवाल संगोष्ठी के विषय पर प्रकाश डालते हुए।

इन सभी का एक सामान्य सा अर्थ यह निकलता है कि पूरा विश्व आज एक गांव की भांति प्रतीत होता है। आधुनिक युग में मानव ने अपने परिश्रम के बल पर विज्ञान ,जनसंचार, औद्योगिक क्रांति ,संचार के साधनों और सूचना क्रांति के कारण इतना विकास कर लिया है कि उसने सभी देशों की सीमाओं का अतिक्रमण कर दिया है। पारस्परिक रूप से यह अवधारणा मानव जाति के इतिहास के साथ चली आई है, जिसमें समस्त विश्व की कल्पना एक परिवार के रूप में की गई है ।

उद्घाटन सत्र के मुख्य अतिथि प्रोफेसर सुरेंद्र कुमार ने अपने संबोधन में बताया कि साहित्य समाज का दर्पण होता है। समाज में घटित घटनाएं साहित्य में साकार रूप में प्रतिफलित होती हैं और उन्होनें बताया कि किस तरह बाजारवाद साहित्य को प्रभावित करता है आज कविता, कहानी ,उपन्यास, नाटक, आलोचना, जनसंचार आदि माध्यमों पर बाजारवाद का व्यापक प्रभाव है। भूमंडलीकरण ने साहित्य को भी उत्पाद में बदल दिया है। आज बाजार की मांग के अनुसार इसके भाव -शिल्प व वस्तु- शिल्प में भी बदलाव किए जा रहे हैं। इसमें मनोरंजन, उत्तेजना और सनसनी पैदा करने वाले तत्वों की घुसपैठ बढ़ी है। साहित्य का बाजार तैयार किया जा रहा है । किताबों की मार्केटिंग के लिए नई -नई रणनीतियां ईज़ाद की जा रही हैं। एक तरफ जहां हिंदी का महत्व बढ़ा है आज के समय में हिंदी पूरे विश्व में अपने पैर फैला रही है चीन, फिजी, सूरीनाम आदि देशों में हिंदी साहित्य का महत्व बढ़ा है वहीं दूसरी तरफ अंग्रेजी के बढ़ते प्रभाव ने हिंदी को प्रभावित किया है।

मुख्य अतिथि डॉ सुरेंद्र कुमार द्वारा संबोधन।

हिंदू प्रबंध समिति के पूर्व प्रधान श्री राजेश सहगल ने मुख्य अतिथि का आभार और धन्यवाद करते हुए अपने उद्बोधन में कहा कि बाजारवाद ने पूरे विश्व को प्रभावित किया है। बाजारवाद एक वृत्ति है जो जीवन को मूल्यों से अलग करने का काम करती है। यह स्त्री मानस और उसके आत्मविश्वास को भी प्रभावित कर रहा है स्त्री छवि को पुरुष समाज नें गढ़ा है। प्रत्येक युग में उसकी छवि अलग-अलग रही है, उसकी भूमिकाएं और स्थितियां भी भिन्न-भिन्न रही है। 21वीं

सदी तक आते-आते समाज की मध्य और निम्न वर्ग की प्रगतिशील महिलाएं अपनी परंपरागत भूमिका से हटकर कुछ अपने लिए करना चाहती हैं, अपनी पहचान स्वतः अपने कार्य से बनाना चाहती हैं ।एक नई छवि और चेतना ने उसके व्यक्तित्व को बदल दिया है आज बाजारवाद के कारण ही नारी चूल्हा- चौकी के संकुचित घेरे से निकलकर सफलता की ऊंचाइयों तक पहुँच पाई है।

श्री राजेश कुमार सहगल (पूर्व प्रधान हिंदू शिक्षण संस्थान) द्वारा संबोधन।

उद्घाटन सत्र के मुख्य अतिथि को हिंदू शिक्षण संस्थान के पूर्व प्रधान, अन्य गणमान्य सदस्य, प्राचार्या, एवं संयोजिका के द्वारा स्मृति चिन्ह भेंट कर सम्मानित किया गया ।

मुख्य अतिथि का स्मृति चिह्न द्वारा सम्मान।

संगोष्ठी के द्वितीय सत्र में श्रीमती बंदना रंगा के द्वारा बीज वक्ता डॉ आलोक रंजन पांडेय (एसोसिएट प्रोफेसर, रामानुजन कॉलेज दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली) एवं समापन सत्र के मुख्य अतिथि प्रोफेसर संजीव वर्मा (सेवानिवृत्त प्रोफेसर, हिंदी विभाग, महर्षि दयानंद विश्वविद्यालय, रोहतक) का संक्षिप्त परिचय दिया गया। बीज वक्ता एवं मुख्य अतिथि का प्राचार्या डॉ रश्मि छाबड़ा, डॉ नीलम मग्गू एवं डॉ अंजू देशवाल के द्वारा पौधे भेंट कर उनका औपचारिक स्वागत किया गया।

बीज वक्ता डॉ आलोक रंजन पांडेय का पौधा भेंट कर किया गया स्वागत ।

मुख्य अतिथि प्रोफेसर संजीव वर्मा का पौधे भेंट कर स्वागत किया गया ।

महाविद्यालय प्राचार्या डॉ रश्मि छाबड़ा ने बीज वक्ता व मुख्य अतिथि का स्वागत व आभार प्रकट करते हुए अपने संबोधन में वास्कोडिगामा से शुरुआत करते हुए विभिन्न ऐतिहासिक तथ्यों के माध्यम से वैश्वीकरण पर प्रकाश डाला व वर्तमान वैश्वीकरण को साहित्य, राजनीति, बाजार व मीडिया से जोड़ कर उसके प्रभावों को प्रकट किया।

डॉ रश्मि छाबड़ा के द्वारा संबोधन ।

राष्ट्रीय संगोष्ठी के बीज वक्ता डॉ आलोक रंजन पांडेय ने अपने वक्तव्य में दुर्योधन एवं युधिष्ठिर को राजा तथा द्रौपदी को जनता का प्रतीक मानकर पौराणिक संदर्भों के माध्यम से बाजारवाद को परिभाषित किया।उन्होंने बताया कि साहित्य समाज का दर्पण होता है और समाज में जिस तरह परिवर्तन होते हैं या समाज की जो स्थिति होती है एक साहित्यकार वही प्रकट करता है। वैश्वीकरण ने राजनीति ,संस्कृति, मीडिया बाजार आदि पर व्यापक प्रभाव डाला है, जिसके कारण समाज में अत्यधिक परिवर्तन आ गया है और समाज में जो परिवर्तन हुआ है साहित्य में भी हुआ है ।साहित्य ने समाज के उत्तरोत्तर बदलती परिस्थितियों को भलीभांति प्रकट किया है।
उन्होंने नागार्जुन, धूमिल, प्रेमचंद, तुलसीदास, दिनकर, कबीर आदि विभिन्न साहित्यकारों की रचनाओं के माध्यम से तथा दैनिक जीवन से जुड़े विज्ञापन एवं फिल्मी जगत के हास्यप्रद तथा रोचक उदाहरणों द्वारा वैश्वीकरण के दौर में साहित्य, राजनीति, मीडिया और बाजार को दर्शाया ।

बीज वक्ता डॉ आलोक रंजन पांडेय द्वारा वक्तव्य।

महाविद्यालय में आयोजित इस एकदिवसीय बहुविषयक राष्ट्रीय संगोष्ठी में 245 प्रतिभागियों को आठ तकनीकी सत्रों में विभाजित किया गया। जिनका मंच संचालन डॉ प्रोमिला यादव, श्रीमती चंदना जैन ,डॉ रीना कत्याल, श्रीमती किरण देवी, डॉ गीता, सुश्री चंद्रिका, डॉ सुमित कुमारी दहिया एवं डॉ रजनी कुमारी के द्वारा किया गया तथा अध्यक्षता डॉ कृष्णा देवी (प्रोफ़ेसर महर्षि दयानंद विश्वविद्यालय ,रोहतक), डॉ अनिल (प्रो महर्षि दयानंद विश्वविद्यालय, रोहतक), डॉ नीलम मग्गू (श्री लाल नाथ हिंदू महाविद्यालय, रोहतक), श्रीमती अनिला बठला (श्री लाल नाथ हिंदू महाविद्यालय, रोहतक), डॉ रविंद्र सिंह गहलावत (एसोसिएट प्रोफेसर, पंडित नेकीराम शर्मा राजकीय महाविद्यालय, रोहतक), डॉ विपिन गुप्ता (प्रोफेसर,वैश्य कॉलेज भिवानी), डॉ मीनाक्षी गुगनानी (श्री लालनाथ हिंदू महाविद्यालय, रोहतक), डॉ शिखा फौगाट (श्री लालनाथ हिंदू महाविद्यालय, रोहतक)के द्वारा की गई।तकनीकी सत्रों में हरियाणा प्रांत के विभिन्न महाविद्यालयों एवं विश्वविद्यालयों से आए हुए शोधार्थियों एवं प्राध्यापकों ने अपने शोध पत्र प्रस्तुत किए।

श्री लालनाथ हिन्दू कॉलेज, रोहतक
हिंदी विभाग
एवं
उच्चतर शिक्षा विभाग, पंचकूला के संयुक्त तत्त्वावधान में
एक दिवसीय बहुविषयक राष्ट्रीय संगोष्ठी

समापन सत्र के मुख्य अतिथि प्रोफेसर संजीव वर्मा ने डॉ आलोक रंजन पांडेय के वक्तव्य की प्रशंसा करते हुए कहा कि उन्होंने सूक्ष्म और गहराई के साथ बाजारीकरण को परिभाषित किया और उन्होंने डॉ रश्मि छाबड़ा, डॉ संदीप कुमार, डॉ हर्षिता, श्रीमती संतोष एवं डॉ हरदीप आदि के शोध पत्रों की प्रशंसा की तथा सभी को भविष्य के लिए मंगलकामनाएं दी और अंत में उन्होंने बताया कि बाजारवाद ने सभी को वस्तु बना दिया एवं सभी को कर्जदार बना दिया विज्ञापनों के उदाहरणों द्वारा समझाया कि किस तरह विज्ञापनों ने हमारी संस्कृति को नष्ट कर दिया है ।अंत में उन्होंने संगोष्ठी की उचित व्यवस्था के लिए आयोजकों की सराहना की।

मुख्य अतिथि प्रोफेसर संजीव वर्मा के द्वारा संबोधन ।

डॉ अंजू देशवाल के द्वारा समापन सत्र के मुख्य अतिथि एवं बीज वक्ता को धन्यवाद ज्ञापित किया गया तथा उन्हें स्मृति चिन्ह भेंट कर सम्मानित किया गया।

समापन स्तर के मुख्य अतिथि प्रोफेसर संजीव कुमार वर्मा को स्मृति चिन्ह भेंट कर सम्मानित किया गया ।

बीज वक्ता आलोक रंजन पांडेय को स्मृति चिन्ह भेंट कर सम्मानित किया गया।

डॉ विपिन गुप्ता जी ने बताया कि साहित्य हमारे संस्कारों को निर्धारित करता है पूर्व वैश्वीकरण ने साहित्य को प्रभावित किया है और उन्होंने बताया कि वैश्वीकरण की विचारधारा समाज, साहित्य, राजनीति, मीडिया व बाजार के लिए कहीं सकारात्मक है तो कहीं नकारात्मक ।

डॉ. विपिन गुप्ता द्वारा संबोधन ।

कार्यक्रम के अंत में सभी प्रतिभागियों को प्रमाण पत्र देकर पुरस्कृत किया गया। श्रीमती बंदना रंगा के द्वारा पूरे कार्यक्रम की रूपरेखा प्रस्तुत की गई।

शोध पत्र प्रस्तोताओं को प्रमाण पत्र वितरित किये गए ।

सह संयोजिका डॉ सुमन रानी के द्वारा सभी को धन्यवाद ज्ञापित किया गया ।कार्यक्रम का मंच संचालन श्रीमती बंदना रंगा एवं डॉ सुमन रानी के द्वारा किया गया।

राष्ट्रगान द्वारा कार्यक्रम का समापन।